जल जीवन है जगत का

डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा ' अरूण' , डी.लिट्
पूर्व प्राचार्य ,
74/3, न्यू नेहरू नगर, रूड़की - 247 667

जल जीवन है जगत का ,
माने सकल समाज
नष्ट इसे करते समय, मनुज न माने लाज ।

नर-नारी, पशु, खग सभी ,
जल से जीवन पाँय !
फिर भी बन अनजान सब, जल को व्यर्थ गवाँय ।

गंगा - यमुना सी नदी ,
हैं अति पंकिल आज !
स्वार्थ - लिप्त हो कर रहा, दूषित इन्हें समाज ।

वर्षा-जल संचित करें ,
संवरेंगे सब काम !
जल का संरक्षण करें, पाएँगे आराम ।

बूँद-बूँद रक्षित रहे ,
पानी है अनमोल !
' पानी व्यर्थ न कीजिए," लाख टके का बोल ।

जल बिन जीवन व्यर्थ है ,
कहते हैं सब लोग !
जल बिन जग जल जाएगा, हावी होंगे रोग ।

जल संरक्षण कीजिए ,
जल जीवन का सार !
जल न रहे यदि जगत में , जीवन है बेकार ।

तीन रूप जल ने धरे ,
होत , तरल अरू भाप !
ब्रहम रूप जल जगत में, दूर करे संताप ।

सागर-जल की भाप ही ,
वर्षा-जल बरसाय !
प्यासी धरती तृप्त हो, झूम-झूम हरषाय ।

शक्ति - स्रोत है जल प्रबल ,
ऊर्जा मिले अपार !
जल से ही जग को मिले, जीवन का आधार ।

निर्मल जल प्रभु ने दिया ,
गदला जगत बनाय !
ज्यों ज्यों जल गदला हुआ, जगत बहुत पछताए ।

जल-बिन तड़पेगा जगत,
खों बैठेगा प्राण !
जल - संरक्षण में छिपा , मानव का कल्याण ।

जल की रक्षा कीजिए ,
दें सबको संदेश !
बना रहेगा जल अगर, बचा रहेगा देश ।

जीवन का आधार जल ,
सुख व स्वास्थ्य का सार !
ब्रहम मान कर पूजिए , करें न जल बेकार ।

****